दैनिक जागरण 31/01/2026

संवैधानिक मूल्यों से ही स्थायी विकास संभव : विनेश कुमार

जागरण संवाददाता • अंबाला: गांधी मेमोरियल नेशनल (जीएमएन) कालेज अंबाला कैंट में "विकसित भारत 2047 के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक मार्गों को अनलाक करना: समावेशी और स्थायी राष्ट्र-निर्माण के लिए रणनीतियां" शीर्षक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय बहुविषयक संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया।

इस संगोष्ठी को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया। हाइब्रिड मोड में आयोजित इस संगोष्ठी में स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष की ओर भारत की विकास यात्रा पर विचार-विमर्श करने के लिए शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, विद्वानों और शासन व प्रशासनिक सेवाओं के

जीएमएन कालेज में संगोष्ठी के दौरान अतिथि। • सौजन्य विज्ञप्ति

प्रतिनिधियों को एकत्रित किया गया। डा. नेहा अग्रवाल ने सेमिनार के बारे में जानकारी दी।

मुख्य अतिथि डा. विनेश कुमार, एसडीएम अंबाला कैंट ने कहा कि विकसित भारत 2047 का दृष्टिकोण संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक तत्वों में निहित है। उन्होंने बताया कि नीति निर्देशक तत्व एक न्यायपूर्ण, समावेशी और कल्याणकारी राष्ट्र के निर्माण के लिए संवैधानिक रोडमैप प्रदान करते हैं। डा. कुमार ने जोर दिया कि स्थायी विकास तभी संभव है जब संवैधानिक मूल्यों को शासन प्रथाओं और सक्रिय जन भागीदारी में अनुवादित किया जाए। डा. हितेश कुमार, उप सचिव हरियाणा राज्य तकनीकी शिक्षा पंचकूला, ने कहा कि नीति पहल और संस्थागत ढांचे तभी सफल हो सकते हैं जब नागरिक जिम्मेदार व्यवहार, कौशल विकास और पर्यावरणीय जागरूकता के माध्यम से सक्रिय रूप से योगदान दें। दवेंद्र नरवाल, कार्यकारी अधिकारी नगर परिषद अंबाला सदर, ने स्थानीय शासन और नागरिक भागीदारी की भूमिका पर विचार किया। उन्होंने नगर स्तर पर शहरी योजना, स्वच्छता, पर्यावरणीय स्थायित्व और सामुदायिक भागीदारी को समावेशी विकास की रीढ़ बताया। प्रो. राजेश अग्रवाल, अध्यक्ष महिला अध्ययन और विकास विभाग पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, ने कहा कि समावेशी राष्ट्र-निर्माण के लिए राज्य, अकादमिक संस्थानों और नागरिक समाज संगठनों के बीच निरंतर सहयोग आवश्यक है।

संगोष्ठी में सामाजिक-सांस्कृतिक मार्ग से समावेशी विकास, आर्थिक विकास, शासन और नीति ढांचे, तकनीकी और वैज्ञानिक नवाचार, पर्यावरणीय स्थायित्व, शिक्षा और मानव संसाधन विकास, और स्वास्थ्य, कल्याण और सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर तकनीकी सत्र शामिल किए गए। कार्यक्रम का आयोजन डा. गुरदेव सिंह के मार्गदर्शन में और डा. रोहित दत्त के संरक्षण में किया गया। संगोष्ठी का समापन डा. अनुपता सिहाग द्वारा किया गया। इस दौरान डा. अमित, महक, यश्वी, जस्मिता आदि उपस्थित रहे।